यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

(सनन्ध ४१/२२)

इसलिए उनको विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ। यह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया, इसलिए वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए।
विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए।। ३७ ।।

अब सम्वत् १७३५ में जागृत बुद्धि के अवतार जाहिर हो जाने के बाद दूसरा और कोई अवतार कैसे हो सकता है, क्योंकि इस जागृत बुद्धि ने सारे संसार के अवगुण (संशय) निकाल दिए हैं, इसलिए अब अन्य अवतार का क्या काम, जब सारे काम ही पूरे कर दिए हैं।

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतारका क्या काम।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम।। ३८ ।।

जब अवतार से भी न होने वाला काम कर दिया है, तो अवतार की अब आवश्यकता ही क्या है? क्योंकि जागृत बुद्धि (परा शक्ति) ने दूसरा कोई ज्ञान छोड़ा ही नहीं। इसके अन्दर सब ज्ञान आ गए हैं।

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि ने पार के रास्ते बता दिए और अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। सूर्य उदय होने के बाद में जुगनू के समान चमकने वाले बैकुण्ठ के अवतारों की क्या महत्ता होगी?

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन।
पुरुख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन।। ४० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस प्रकार से तुम स्पष्ट समझ लेना कि अब और कोई दूसरा अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े के ऊपर अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन में राजजी महाराज के स्वयं जाहिर न होने के कारण से घोड़ा अधूरा कहा गया है जो अब महामति के तन से सम्वत् १७३५ में जाहिर हो गया है। इन वचनों का जरा विचार कर देखो।

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४७१ ॥

गोकुल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार।
तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथ! किसी को किसी प्रकार का संशय न रहे, इसलिए मैंने अलग-अलग अवतारों का वर्णन किया है। अब यह विचार करने की बात है वह कौन सी जागृत बुद्धि का अवतार है जो भगवान विष्णु को भी जागृत करके भवसागर से पार करके अखण्ड करेगा।

Nijanand App

सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रह्या उरझाए।
ए भी सीधा ना कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए।। २ ।।

शुकदेवजी ने बाकी अवतारों का वर्णन किया था, पर बुध अवतार के कहने में वह भी उलझ गए। जब शुकदेवजी भी वर्णन नहीं कर सके तो दूसरे कैसे कर सकते हैं?

ए तो अछरातीत की, लीला हमारी जेह।
पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह।। ३ ।।

यह तो हमारे अक्षरातीत धनी की लीला है। पहले सबका संशय मिटा करके इनकी भी थोड़ी हकीकत बताऊंगी।

वैराट की बिध कही तुमको, जिन कछू राखों संदेह।
अखंड गोकुल और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए।। ४ ।।

मैंने तुमको चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड क्षर पुरुष की हकीकत बताई। अब तुम्हें कोई संशय न रहे इसलिए अखण्ड गोकुल और प्रतिबिम्ब गोकुल दोनों का भेद बताती हूं।

ए खेल देख्या तो सांचा, जो अखंड करूं इन बेर।
पार वतन देखाय के, सब उड़ाऊं अंधेर।। ५ ।।

यह खेल जो हम देख रहे हैं, इसको अखण्ड कर देंगे तो यह भी सत् हो जाएगा, परन्तु इसके पहले अखण्ड परमधाम का ज्ञान देकर सबकी अज्ञानता मिटा देंगे।

अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पे उजास।
रास लीला श्रीकृष्ण गोपी, खेले सदा अविनास।। ६ ।।

सुन्दरसाथजी! अब हमारे पास ऐसा अखण्ड जागृत बुद्धि का ज्ञान है जिससे किसी प्रकार का एक पल भी अन्तर (संशय) नहीं रहेगा। श्री कृष्ण और गोपियां जो बृज और रास में थे, वह आज भी सबलिक ब्रह्म में बृज की दिन और रात की तथा रास में केवल रात की अखण्ड लीला कर रहे हैं।

प्रतिबिंब लीला या दिन थें, फेर के गोकुल आए।
चले मथुरा द्वारका, बैकुंठ बैठे जाए।। ७ ।।

रास लीला के बाद में यह ब्रह्माण्ड फिर से नया बना और इस गोकुल में प्रतिबिम्ब की लीला की। सात दिन गोकुल लीला के बाद चार दिन मथुरा की लीला कर भगवान विष्णु के अवतार के रूप में एक सौ बारह वर्ष तक द्वारिका में लीला कर भगवान विष्णु बैकुण्ठ वापस पधारे।

तारतम नूर प्रगट्या, तिन तेजें फोरयो आकास।
लागी सिखर पाताल लो, अब रहे ना पकरयो प्रकास।। ८ ।।

अब तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) के ज्ञान का सूर्य निकल आया है, जिसके अखण्ड तेज की किरणों से ऊपर बैकुण्ठ तक और नीचे पाताल तक अखण्ड ज्ञान फैल रहा है जो किसी के रोकने से नहीं रुकेगा।

किरना सबमें कुलांभियां, गयो वैराट को अग्यान।
दृढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दियो उनमान।। ९ ।।

अब सारे जगत में तारतम की किरणें फैल गईं और पूरे क्षर के ब्रह्माण्ड का अज्ञान मिट गया। चौदह लोकों के जीवों का अनुमान मिट गया और पूर्ण ब्रह्म के ज्ञान की दृढ़ता आ गई।

Nijanand App

अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर।
पसरके देखाइया, बृज अखंड जो और।। १० ।।

अब इस ज्ञान की रोशनी बीच में कहीं नहीं रुकेगी। यह सारे ब्रह्माण्ड के बाहर बेहद तक फैलकर अखण्ड बृज जो योगमाया में है, में भी सबको ज्ञान हो जाएगा।

बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर।
अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर।। ११ ।।

सबलिक ब्रह्म योगमाया में बृज लीला किस तरह से अखण्ड है, उंसकी सारी हकीकत बताती हूं। जहां ग्यारह वर्ष लीला करने के बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाकर रास लीला खेली और रास लीला के बाद घर (परमधाम) वापस आए।

गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास।
पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास।। १२ ।।

अखण्ड गोकुल में यमुनाजी का किनारा अति सुन्दर है। यह बयालीस कालोनियों (मुहल्लों) में बसा है। उसी के पास लगती हुई एक और कालोनी (पुरी) है जहां रास (विलास) की अखण्ड लीला हो रही है।

बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम।
कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम।। १३ ।।

पुरियों में आबादी है तथा गांव तीन तरफ बसा है। जिसके किनारे पर एक टीला है। टीले पर उपनन्द का घर है।

तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर।। १४ ।।

दूसरी तरफ अच्छी कालोनी बसी है। जिसके बीच में से गायों के जाने का रास्ता है। यहां पर ग्वाल बालों के घर में नन्दनन्दन श्री कृष्ण खेल रहे हैं।

पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए।
तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले।। १५ ।।

दूसरी तरफ सादूल पटेल की कालोनी है और तीसरी तरफ वृषभानजी की कालोनी है। इस प्रकार तीनों कोनों पर कालोनियां बसी हैं।

नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट।। १६ ।।

नन्दजी की कालोनी के सामने पूर्व दिशा में यमुनाजी का किनारा है। जहां पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर वृक्षों की छाया है तथा बट के वृक्षों की लम्बी-लम्बी आड़ी-टेड़ी डालियां हैं।

सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार।
अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार।। १७ ।।

यमुनाजी के किनारे पर वन की बड़ी सुन्दर छाया है। जहां पर अनेक प्रकार की बेलें वृक्षों पर चढ़ी हैं और फलों की सुगन्ध से भरी शीतल वायु आती है।

Nijanand App

तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल।
आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल।। १८ ।।

तीन कालोनियां तीन मामाओं की हैं जो बस्ती से मिली हुई ही बसी हैं। यह तीनों मामा बड़े बहादुर हैं और नन्दजी की कालोनी (मुहल्ला) के चौगिर्द रहते हैं।

गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम।
दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम।। १९ ।।

गांगा भाई, चांपा भाई और जेता भाई यह तीनों मामाओं के नाम हैं जो दक्षिण की दिशा में और पश्चिम की दिशा में घेर कर बसे हैं।

नंदजी के आठ मंदिर, मांडवे एक मंडान।
पीछे बाड़े गौओं के, तामें आथ सर्वे जान।। २० ।।

नन्दजी के मकान में आठ कमरे हैं तथा बीच में एक आंगन है और इसके पीछे गौओं का बाड़ा है जिसमें सब गायें रहती हैं।

रेत झलके आंगने, दूध चरी चूल्हा आगल।
आईजी इन ठौर बैठें, और बैठें सखियां मिल।। २१ ।।

आंगन में रेत चमक रही है और आगे चूल्हे के ऊपर दूध उबलता है। यशोदा मैया इसी ठिकाने सब सखियों के साथ मिलकर बैठती हैं।

मंदिर मोदी तेजपाल को, इत चरी चूल्हा पास।
कोइक दिन आए रहे, याको मथुरा में बास।। २२ ।।

तेजपाल मोदी का कमरा चरी चूल्हा के पास है। वह कुछ दिन यहां आकर रहते हैं। वैसे उनका घर मथुरा में है।

सरूप दस इत आरोगें, पाक साक अनेक।
भागवंती बाई भली पेरे, रसोई करे विवेक।। २३ ।।

यहां पर नन्दजी के घर दस सदस्यों की सुन्दर रसोई बनती है। यहां पर भागवन्तीबाईजी रसोई बड़े भाव से बनाती हैं।

लाड़लो नंद जसोमती, रोहिनी बलभद्र बाल।
पालक पुत्र कल्यानजी, वाको पुत्र गोपाल।। २४ ।।

श्री कृष्णजी, नन्दजी, यशोदा मैया, रोहिणीजी, बलदाऊजी तथा पालक पुत्र (गोदी लिया) कल्याणजी तथा उनके पुत्र गोपालजी रहते हैं।

बेहेने दोऊ जीवा रूपा, भेलियां रहें मोहोलान।
और बाई भागवंती, नारी घर कल्यान।। २५ ।।

दो बहनें जीवा और रूपा भी इस महल में रहती हैं तथा कल्याणजी की पत्नी भागवन्तीबाई रहती हैं।

Nijanand App

पुरो जो वृखभान को, भेलो भाई लखमन।
नंदजी के उत्तर दिसे, बसत बास पूरन।। २६ ।।

वृषभानजी की कालोनी में उनके भाई लखमनजी भी रहते हैं। नन्दजी के मकान की उत्तर दिशा में वृषभान की सुन्दर कालोनी है।

सरूप साते भली भांते, आरोगें अंन पाक।
कल्यान बाई रसोई करे, विध विध के बहु साक।। २७ ।।

यहां पर सात सदस्य अच्छी प्रकार भोजन आरोगते हैं। कल्याणबाई अनेक प्रकार की सब्जियां बनाती हैं।

राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात।
सुदामा कल्यानजी, याथें छोटो कृष्णजी भ्रात।। २८ ।।

राधिकाजी के पिता श्री वृषभानजी तथा माता प्रभावतीबाई, भाई सुदामाजी, कल्याणजी और सबसे छोटे कृष्णजी रहते हैं।

कल्याण बाई नारी सुदामा, अंग धरत अति बड़ाई।
करत हांसी कई भांतें, याकी स्यामसों सगाई।। २९ ।।

कल्याणबाई सुदामाजी की पत्नी हैं जो बहुत ही सयानी और चतुर हैं। वह अपनी ननद राधाबाई से तरह-तरह से हंसी करती हैं। राधाजी की मंगनी श्यामजी (श्री कृष्णजी) से हुई है।

मंदिर छे मांडवे आगे, चरी चढ़े दूध माट।
स्यामा गोद प्रभावती, ले बैठत हैं खाट।। ३० ।।

वृषभानजी के आंगन के आगे छः (६) कमरे हैं, जहां पर मटकों में दूध उबाला जाता है। जहां पर प्रभावतीबाई अपनी गोदी में राधिकाजी को लेकर खाट पर बैठती हैं।

मांगा किया राधाबाई का, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ।
मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ।। ३१ ।।

राधाजी की मंगनी श्री कृष्णजी के साथ हुई थी, परन्तु जाहिरी रूप से शादी (लगन) नहीं हुई थी। यह दोनों ही परमधाम के मूल सम्बन्धी (राजजी-श्यामाजी) एक ही अंग हैं, जो अपने धनी के साथ आनन्द से खेलती हैं।

घुरसे गोरस हेत में, घर घर होत मथन।
खेले सब में सांवरो, मिने बाहेर आंगन।। ३२ ।।

घर-घर में दही का मथना होता है तथा सभी के घर में भीतर-बाहर आंगन में सांवरिया खेलते हैं।

पुरे सारे बीच चौरे, बैठे गोप बूढ़े भराए।
चारों पोहोर गोठ घूघरी, खेलते दिन जाए।। ३३ ।।

सब कालोनियों के बीच में एक बड़ा चबूतरा है जहां वृद्ध लोग इकट्ठे बैठते हैं और दिन भर घुंघरी (गेहूं की खीर) खाते हैं और इस तरह हंसते-खेलते दिन व्यतीत होते हैं।

Nijanand App

और सबे गौचारने, गोप गोवाला जाए बन।
भोर के बन संझा लों, यों होत बृज वरतन।। ३४ ।।

सभी गोप और ग्वाले गाएं चराने वन में जाते हैं। प्रातः वन में जाते हैं और शाम को लौटते हैं। इस प्रकार बृज लीला हो रही है।

तेजपाल मोदी वलोट पूरे, जो कछू चाहिए सोए।
घृत लेवे बड़े बड़े ठौरों, और बिरतिया होए।। ३५ ।।

तेजपाल मोदी यहां पर सामान के बदले सामान जो जिसको चाहिए लेते-देते हैं। वह बड़े-बड़े घरों से घी लेते हैं और आपस में रिश्ते-नाते भी करवाते हैं।

घोलिए इत घोल करने, आवत बृज में जे।
फेर जाए रहे मथुरा, वस्त भाव ले दे।। ३६ ।।

यहां और भी व्यापारी बृज में व्यापार करने आते हैं और सामान को ले दे करके मथुरा में जाकर बसते हैं।

स्याम संग गोवाल ले, खेलत जमुना घाट।
विनोद में हम आवें जाएं, जल भरने इन बाट।। ३७ ।।

श्री कृष्णजी ग्वालों के साथ यमुनाघाट पर खेलते हैं और सखियां भी प्रसन्न मन से इस रास्ते से यमुना से जल भरने आती-जाती हैं।

विलास बृज में पियाजीसों, बरतत एह बात।
वचन अटपटे वेधें सब को, अहनिस एही तात।। ३८ ।।

बृज में अपने पिया (श्री कृष्णजी) के साथ हम आनन्द के साथ खेलते थे और रात-दिन आपस में धनी की हंसी के अटपटे वचन सबको तड़पाया करते थे।

पिउ प्रेमें भीगा खेलहीं, पुरे सारो मांहें।
खेले खिन जासों ताए दूजा, सूझे नहीं कछु क्यांहें।। ३९ ।।

श्री कृष्णजी प्रेम में मस्त सब कालेनियों में (फलीया मां) खेल रहे हैं। वह जिसके साथ एक पल भी खेल लेते हैं वह श्री कृष्ण का ही हो जाता है। उसे और फिर कुछ सूझता ही नहीं।

हम संग खेलें कई रंगे, जाते जमुना पानी।
आठों पोहोर अटकी अंगे, एह छब एह बानी।। ४० ।।

जब हम यमुनाजी से जल भरने जाते थे तो हमारे साथ भी कई तरह की लीला करते थे। श्री कृष्णजी की छवि और बोली आठों पहर दिन-रात हमारे दिल में बसी रहती थी।

घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए।
विलास विनोद पिया संगे, अह निस करते जाए।। ४१ ।।

घर-घर में आनन्द और उत्सव हो रहे हैं और खुशियों का पारावार नहीं है। श्री कृष्णजी के साथ में आनन्द की लीला करते रात-दिन व्यतीत होते हैं।

Nijanand App

सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए।
सेज्याऐं खिन में प्रेमें पूरा, सुख देवें चित चाहे।। ४२ ।।

श्री कृष्णजी का स्वरूप अति सुन्दर बालक का है और वह बोली बड़ी मीठी बोलते हैं। हम सखियां गोदी में उठाकर अपने घर ले जाती थीं और एक ही पल में वह किशोर रूप धारण कर चित-चाहा सेज्या का सुख हमको देते थे।

बाछरू ले बन पधारे, आठवें दसवें दिन।
कबूं गोवरधन फिरते, मांहें खेलें बारे बन।। ४३ ।।

बछड़े लेकर आठवें दसवें दिन जब श्री कृष्णजी वन में जाते हैं तो वह कभी गोवर्धन पहाड़ के पास तथा कभी बारह वनों में खेलते हैं।

अखंड लीला अहनिस, हम खेलें पिया के संग।
पूरे पिउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग।। ४४ ।।

हम रात-दिन पिया के साथ अखण्ड लीला करते थे तथा प्रीतम भी नित्य नए-नए आनन्द देकर हमारी इच्छा पूरी करते थे, यह लीला आज भी अखण्ड है।

श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई।
कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के ब्रज में श्री कृष्ण के तन में प्रकट होने पर कोई भी ब्रजवधू मथुरा नहीं गई। छोटी-छोटी लड़कियां (कुमारिकाएं) खेलते समय हमारे साथ रहती थीं तथा श्री कृष्णजी उनके साथ दान लीला करते थे।

खेल खेलें कुमारका, चीले कुल अभ्यास।
दूध दधी छोटे बासन, करे रंग रस बन विलास।। ४६ ।।

अपनी माताओं की रीतियों को देखकर कुमारिकाएं भी वैसे ही खेल खेली थीं। वह छोटे-छोटे बर्तनों में दूध दही लेकर वन में आनन्द की लीला करने जाती थीं।

बृज वधू मिने खेलने, संग केतिक जाए।
सांवरो इत दान लेने, करे आड़ी लकुटी ताए।। ४७ ।।

ब्रज की गोपियों के साथ कई कुमारिकाएं भी खेलने वन में जाती थीं। श्री कृष्णजी वन-दान लेने के लिए लाठी आड़ी लगा देते थे (टोल टैक्स का बैरियर)।

दूध दधी माखन ल्यावें, हम पियाजी के काज।
तित दधी हमारा छीन के, देवें गोवालों को राज।। ४८ ।।

हम श्री कृष्णजी के वास्ते घर से दूध, दही और माखन लेकर वन में जाते थे, श्री कृष्णजी वहां हमारा दही ग्वालों को दे देते थे।

भाग जांए गोवाल न्यारे, हम पकड़ राखें पिउ पास।
पीछे हम एकांत पिया संग, करें बन में विलास।। ४९ ।।

ग्वाले दही लेकर अलग भाग जाते थे और श्री कृष्णजी हमें पकड़कर अपने पास बिठा लेते थे, जिससे हम पीछे अकेले में प्रीतम के साथ वन में विलास करते थे जो लीला आज भी अखण्ड है।

Nijanand App

कुमारका हम संग रेहेती, पिउ खेलते सखियन।
मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन।।५०।।

पियाजी के साथ खेलते समय कुमारिकाएं भी हमारे साथ रहती थीं इस लीला को देखकर ही उनका सनमंध (सम्बन्ध) यहां से जागृत हुआ।

अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग।
इन जोतें सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग।।५१।।

यह ब्रज की लीला जो अखण्ड है, यहां नित्य ही नए-नए आनन्द होते हैं जो तारतम वाणी के उजाले से हम अपने धनी के साथ कैसा आनन्द करती थीं, ज्ञान हो गया।

आवे जब उजालियां, हम खेलें लेकर ढ़ोल।
पिया करें विनोद हांसियां, सो कहे न जाए बोल।।५२।।

जब रात उजाली होती थी तो हम पिया के साथ ढोल बजाकर खेलते थे। धनी श्री कृष्णजी हमारे साथ तरह-तरह के विनोद (हंसी) की बातें करते थे, जिनका वर्णन सम्भव नहीं है।

उलसे गोकुल गाम सारा, हेत हरख अपार।
धन धान वस्तर भूखन, द्रव्य अखूट भंडार।।५३।।

सारा गोकुल गांव आनन्द मंगल की उमंगों से भरा हुआ है। धन, अनाज, वस्त्र, आभूषण तथा अन्य सभी सामग्री के अखूट भण्डार (कभी न खत्म होने वाले) भरे पड़े हैं।

जनम व्याह नित प्रते, सारे पुरे अनेक होए।
नेक कारज करे कछुए, तो बुलावे सब कोए।।५४।।

प्रतिदिन हर कालोनी में (फलीया मां) कहीं जन्म, कहीं विवाह-लगन होता था। किसी के यहां थोड़ा भी उत्सव होता था तो सबको निमन्त्रण देकर बुलाया जाता था।

नाटारंभ कई बाजंत्र, धन खरचें अहीर उमंग।
साथ सब सिनगार कर, हम आवें अति उछरंग।।५५।।

सभी ग्वाले बड़ी उमंग में खूब धन खर्च करते थे और बाजा बजाकर नाचते थे। गोपियां भी शृंगार करके बड़ी उमंग में आती थीं।

बलगें विनोदें हमसों, देखते सब जन।
पर कोई न विचारे उलटा, सब कहे एह निसन।।५६।।

सबके देखते ही बालक स्वरूप श्री कृष्णजी गोपियों से आकर लिपट जाते थे, परन्तु बालक समझकर कोई उलटे विचार नहीं करता था।

बात याकी हम जाने, और जाने हमारी एह।
ना समझे कोई दूसरा, ए अंदर का सनेह।।५७।।

अपने धनी श्री कृष्णजी की बात हम समझते थे और हमारी बात कृष्णजी समझते थे। दूसरा कोई हमारे आपस के अन्दर के प्रेम को नहीं समझ पाया।

Nijanand App

ए होत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन।
इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धंन धंन।।५८ ।।

यह सब हमारे मन की इच्छा पूरी करने के लिए होता था। इस समय के आनन्द का पारावार नहीं था, सब बड़े उमंग में थे।

बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन।
जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन।।५९ ।।

श्री कृष्णजी ने अपने प्रेम के वशीभूत सारे ब्रज को दीवाना बना रखा है और वह बहुत चतुर हैं। जहां भी मिलते हैं गोपियों से हंसी-विनोद की ही बातें करते हैं।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमुना बन।
थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन।।६० ।।

नन्दजी, यशोदाजी, ग्वाल, गोपी, गायें, बछड़े, यमुनाजी, वन, पशु, पक्षी, चर तथा अचर रोज ही नई लीला करते हैं।

अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख।
बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख।।६१ ।।

अब इस लीला को कहां तक कहूं? यह बेशुमार सुख की लीला है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम के साथ सखियों के साथ खेल किया।

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन।।६२ ।।

एक दिन गाय चराने पियाजी वृन्दावन गए। ग्वाल सब गायें लेकर वापस आ गए। पीछे योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया।

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड।
एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड।।६३।।

इतने दिन तक ब्रज की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड में की। फिर उसका प्रलय करके इस योगमाया में सबलिक ब्रह्म में उसे अखण्ड कर दिया।

सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध।
अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध।।६४ ।।

इस तरह से ब्रज की लीला जो अखण्ड की है उसकी हकीकत है। अब आगे वृन्दावन की कहती हूं जो और बड़े आनन्द की लीला है।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५३५ ।।

जोगमाया को प्रकरण

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास।
जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास।। १ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान की रोशनी अब रोके नहीं रुकती। क्षर ब्रह्माण्ड (कालमाया) के बाद हमने दूसरी ब्रज की लीला को योगमाया में देखा और अब इस तारतम वाणी के बल से तीसरे ब्रह्माण्ड सबलिक में पहुंचे, जहां हमारी अखण्ड रास की लीला हो रही है।

Nijanand App